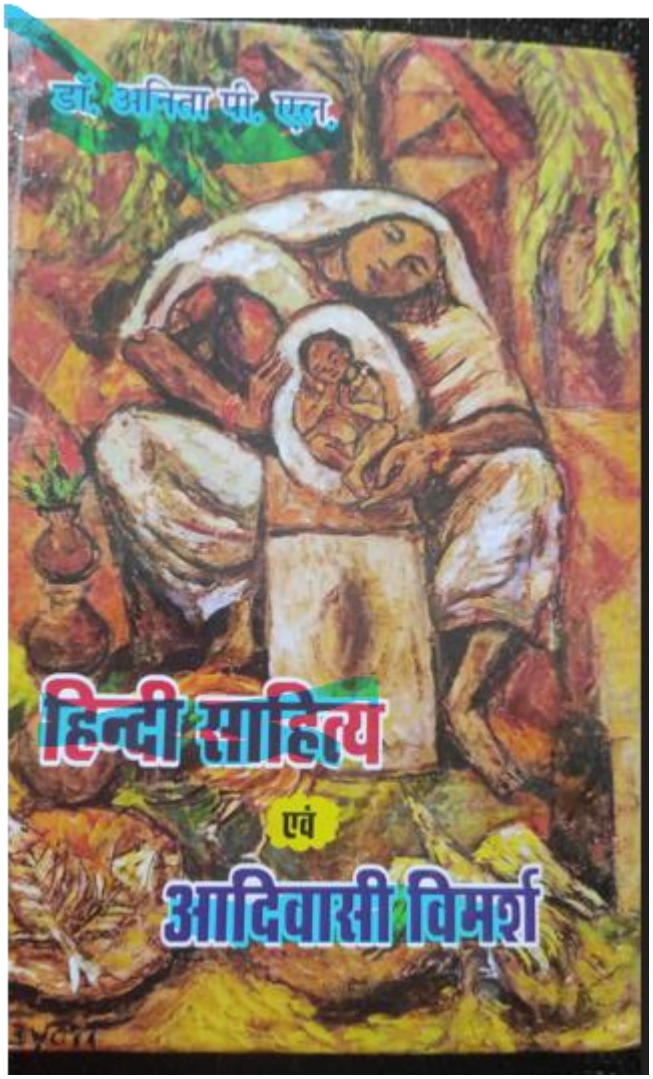
डॉ. अनिता पी. एल.
हिन्दी साहित्य
एवं
आदिवासी विमर्श

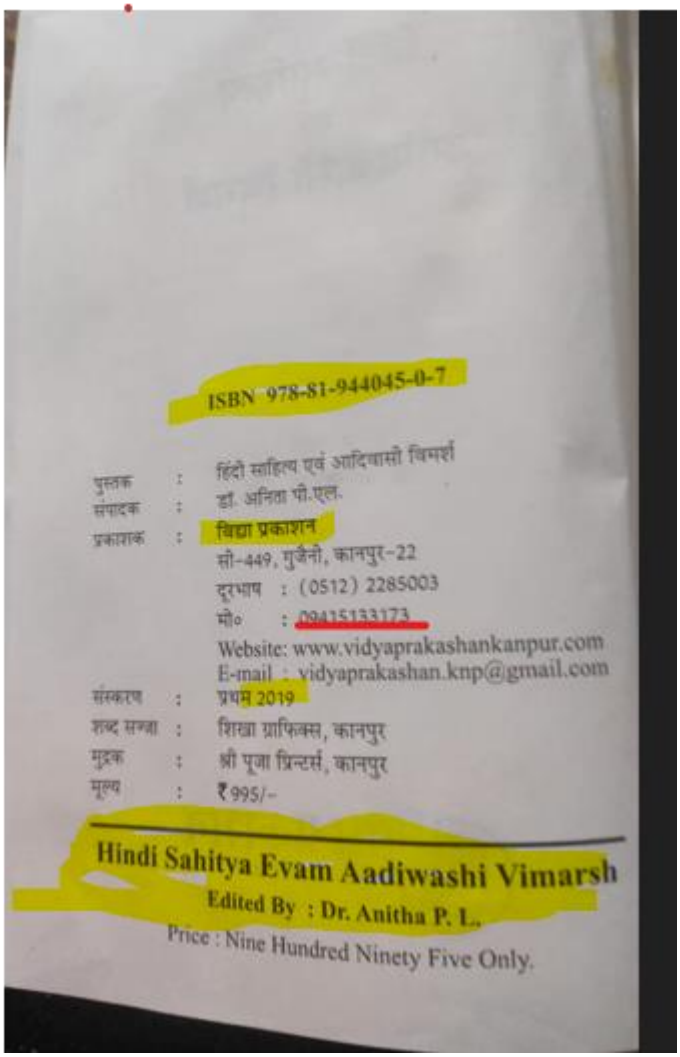

ISBN 978-81-944045-0-7

पुस्तक : हिंदी साहित्य एवं आदिवासी विमर्श
संपादक : डॉ. अनिता पी.एल.
प्रकाशक : विद्या प्रकाशन
सी-449, गुजैनी, कानपुर-22
दूरभाष : (0512) 2285003
मो० : 09415133173
Website: www.vidyaprakashankanpur.com
E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
संस्करण : प्रथम 2019
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : श्री पूजा प्रिन्टर्स, कानपुर
मूल्य : ₹995/-

Hindi Sahitya Evam Aadiwashi Vimarsh
Edited By : Dr. Anitha P. L.
Price : Nine Hundred Ninety Five Only.

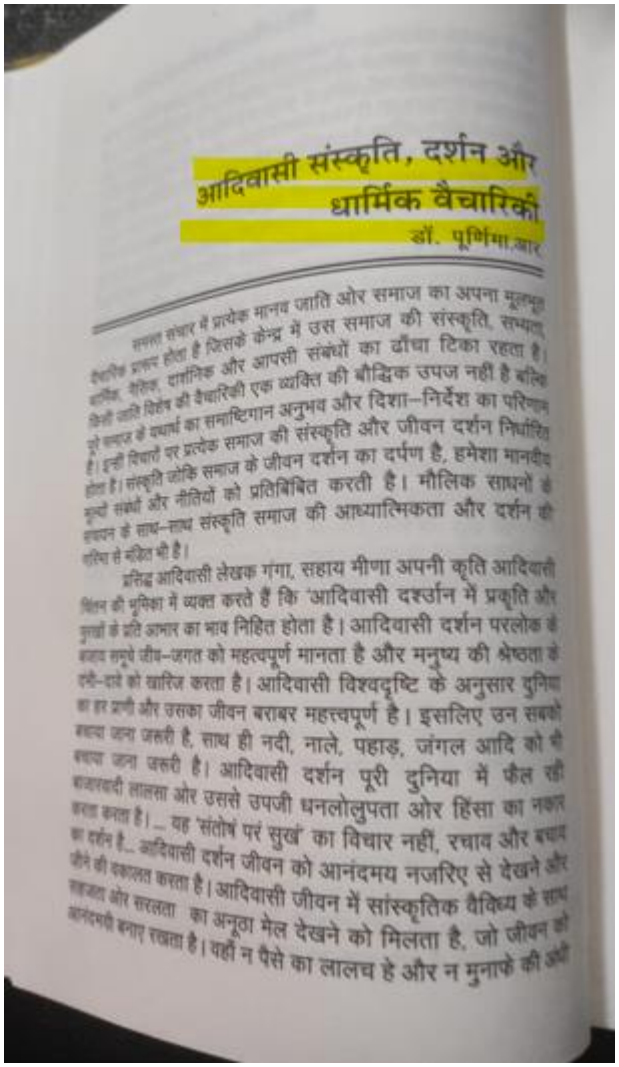

आदिवासी संस्कृति, दर्शन और धार्मिक वैचारिकी

डॉ. पूर्णिमा आर

समस्त संसार में प्रत्येक मानव जाति ओर समाज का अपना मूलभूत वैचारिक प्रस्फुरण होता है जिसके केन्द्र में उस समाज की संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक, नैतिक, दार्शनिक और आपसी संबंधों का ढाँचा टिका रहता है। किसी जाति विशेष की वैचारिकी एक व्यक्ति की बौद्धिक उपज नहीं है बल्कि पूरे समाज के यथार्थ का समाष्टिगान अनुभव और दिशा–निर्देश का परिणाम है। इन्हीं विचारों पर प्रत्येक समाज की संस्कृति और जीवन दर्शन निर्धारित होता है। संस्कृति जोकि समाज के जीवन दर्शन का दर्पण है, हमेशा मानवीय मूल्यों संबंधों और नीतियों को प्रतिबिंबित करती है। मौलिक साधनों के उत्पादन के साथ–साथ संस्कृति समाज की आध्यात्मिकता और दर्शन की गरिमा से मंडित भी है।

प्रसिद्ध आदिवासी लेखक गंगा, सहाय मीणा अपनी कृति आदिवासी चिंतन की भूमिका में व्यक्त करते हैं कि 'आदिवासी दर्शन में प्रकृति और पुरखों के प्रति आभार का भाव निहित होता है। आदिवासी दर्शन परलोक के बजाय समूचे जीव–जगत को महत्वपूर्ण मानता है और मनुष्य की श्रेष्ठता के दंभ–दावे को खारिज करता है। आदिवासी विश्वदृष्टि के अनुसार दुनिया का हर प्राणी और उसका जीवन बराबर महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन सबको बचाया जाना जरूरी है, साथ ही नदी, नाले, पहाड़, जंगल आदि को भी बचाया जाना जरूरी है। आदिवासी दर्शन पूरी दुनिया में फैल रही बाजारवादी लालसा ओर उससे उपजी धनलोलुपता ओर हिंसा का नकार करता है। ... यह 'संतोषं परं सुखं' का विचार नहीं, रचाव और बचाव का दर्शन है... आदिवासी दर्शन जीवन को आनंदमय नजरिए से देखने और जीने की वकालत करता है। आदिवासी जीवन में सांस्कृतिक वैविध्य के साथ सहजता ओर सरलता का अनूठा मेल देखने को मिलता है, जो जीवन को आनंदमयी बनाए रखता है। वहीं न पैसे का लालच हे और न मुनाफे की अंधी

आदिवासी संस्कृति, दर्शन और धार्मिक वैचारिकी

डॉ. पूर्णिमा.आर.

समस्त संचार में प्रत्येक मानव जाति ओर समाज का अपना मूलभूत वैचारिक प्रारूप होता है जिसके केन्द्र में उस समाज की संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक, नैसिक, दार्शनिक और आपसी संबंधों का ढाँचा टिका रहता है। किसी जाति विशेष की वैचारिकी एक व्यक्ति की बौद्धिक उपज नहीं है बल्कि पूरे समाज के यथार्थ का समाष्टिगान अनुभव और दिशा–निर्देश का परिणाम है। इन्हीं विचारों पर प्रत्येक समाज की संस्कृति और जीवन दर्शन निर्धारित होता है। संस्कृति जोकि समाज के जीवन दर्शन का दर्पण है, हमेशा मानवीय मूल्यों संबंधों और नीतियों को प्रतिबिंबित करती है। मौलिक साधनों के संचयन के साथ–साथ संस्कृति समाज की आध्यात्मिकता और दर्शन की गरिमा से मंडित भी है।

प्रसिद्ध आदिवासी लेखक गंगा, सहाय मीणा अपनी कृति आदिवासी चिंतन की भूमिका में व्यक्त करते हैं कि 'आदिवासी दर्शन में प्रकृति और पुरखों के प्रति आभार का भाव निहित होता है। आदिवासी दर्शन परलोक के बजाय समूचे जीव–जगत को महत्वपूर्ण मानता है और मनुष्य की श्रेष्ठता के दंभी–दावे को खारिज करता है। आदिवासी विश्वदृष्टि के अनुसार दुनिया का हर प्राणी और उसका जीवन बराबर महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन सबको बचाया जाना जरूरी है, साथ ही नदी, नाले, पहाड़, जंगल आदि को भी बचाया जाना जरूरी है। आदिवासी दर्शन पूरी दुनिया में फैल रही बाजारवादी लालसा ओर उससे उपजी धनलोलुपता ओर हिंसा का नकार करता करता है। .... यह 'संतोषं परं सुखं' का विचार नहीं, रचाव और बचाव का दर्शन है.... आदिवासी दर्शन जीवन को आनंदमय नजरिए से देखने और जीने की वकालत करता है। आदिवासी जीवन में सांस्कृतिक वैविध्य के साथ सहजता ओर सरलता का अनूठा मेल देखने को मिलता है, जो जीवन को आनंदमयी बनाए रखता है। वहाँ न पैसे का लालच हे और न मुनाफे की अंधी